MTTP–001

बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)

अनुवाद परियोजना

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद परियोजना
(एम.टी.टी.पी.-001)

(जनवरी 2020 और जुलाई 2020 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.सी.बी.एच.टी.

जैसा कि आपको बताया जा चुका है कि 'बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम' (पी.जी.सी.बी.एच.टी.) को पूरा करने के लिए आपको चार–चार क्रेडिट के चार पाठ्यक्रम करने होंगे। इस स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट कार्यक्रम का चौथा पाठ्यक्रम (एम.टी.टी.पी.–001) 'अनुवाद परियोजना' का है। इस परियोजना के अंतर्गत आपको दी गई सामग्री का अनुवाद करना है। अनुवाद के लिए सामग्री संलग्न है। इसका अनुवाद करके आपको मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करना है। ध्यान रहे कि यह 'अनुवाद परियोजना' एक स्वतंत्र पाठ्यक्रम के समकक्ष है। इसमें उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

परियोजना करने का तरीका

प्रस्तुत सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इससे आप समझ जाएँगे कि यह किस विषय से संबंधित है और इसमें प्रमुखतया क्या कहा गया है। इसके बाद आप इस सामग्री में से वे शब्द और मुहावरे आदि छाँटिए जिनका अर्थ अथवा जिनके हिंदी पर्याय आपको पता नहीं हैं। इन शब्दों को एक कागज़ पर नोट कर लीजिए। ध्यान दीजिए कि अनूद्य सामग्री के अनुवाद करते समय आपको कौन–कौन से कोश देखने की जरूरत है। विषय के अनुरूप समुचित कोशों में से उन शब्दों के पर्याय नोट कर लीजिए।

अब अनूद्य सामग्री को एक बार पुनः पढ़िए। गौर कीजिए कि अब की बार यह आपको ज्यादा अच्छी तरह समझ आती है कि नहीं। यदि कोई अंश समझ में न आ रहा हो तो उसे फिर से पढ़िए और पता लगाइए कि कठिनाई कहाँ है – शब्दों का अर्थ समझने में अथवा वाक्य–विन्यास को समझने में। यदि कोई वाक्य न समझ आ रहा हो तो उसे दूसरी बार, तीसरी बार पढ़िए।

इस सामग्री में प्रयुक्त संक्षिप्तियों पर ध्यान दीजिए। उनके पूर्ण रूप क्या हैं, जानने की कोशिश कीजिए। अधिकांश संक्षिप्तियों के पूर्ण रूप आपको इस सामग्री में ही मिल जाएँगे।

इस तरह अनूद्य सामग्री का अर्थ भली–भाँति समझ लेने के पश्चात उसका अनुवाद आरंभ कीजिए। अनुवाद करते समय भी शब्दकोश का भरपूर उपयोग कीजिए। जिन शब्दों के अर्थ आपको पता हैं उनके लिए भी शब्दकोश देखिए ताकि विषय और संदर्भ के अनुकूल पर्यायों का चयन कर सकें। वाक्य–विन्यास लक्ष्य भाषा (अर्थात् हिंदी/मलयालम) की प्रकृति के अनुसार कीजिए। यानी आपका बनाया वाक्य ऐसा लगे कि आप अनुवाद नहीं कर रहे बल्कि उस भाषा में मूल रूप में लिख रहे हैं। ऐसा तभी होगा जब आपकी वाक्य–रचना स्रोत में कही गई बात का अनुकरण न होकर लक्ष्य भाषा की कथन–शैली के अनुरूप और सहज होगी।

एक पैराग्राफ अथवा एक पृष्ठ का अनुवाद करने के बाद अपने अनुवाद को मूल सामग्री से मिलाइए और देखिए कि आपके अनुवाद का वही अर्थ निकल रहा है जो मूल कथन में कहा गया है। यदि अंतर दिखाई दे तो अपने अनुवाद में सुधार कीजिए। पूरी तरह आश्वस्त होने के बाद अनुवाद को आगे बढ़ाइए। अगले पैराग्राफ/पृष्ठ के अनुवाद के बाद फिर यही जाँच–प्रक्रिया दोहराइए और अनुवाद करते जाइए।

अनुवाद पूरा करने के पश्चात उसे एक बार फिर मूल सामग्री से मिलाइए और जाँच कीजिए कि आपका अनुवाद और मूल सामग्री समान अर्थ प्रकट करते हैं। यह भी जाँच कीजिए कि कहीं कोई पैराग्राफ, वाक्य अथवा वाक्यांश अनुवाद होने से छूट तो नहीं गया है। तत्पश्चात अनूदित सामग्री को साफ–साफ लिखकर हस्तलिखित रूप में लिखिए अथवा टंकण की व्यवस्था कीजिए।

अनुवाद परियोजना की प्रस्तुति

- अनुवाद परियोजना फुलस्केप आकार के कागज पर पर्याप्त हाशिया छोड़ते हुए एक तरफ टंकित कराके और बाइंडिंग कराके प्रस्तुत करें।

- अनूदित परियोजना के आरंभिक पृष्ठ पर आपके इस कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड और शीर्षक, नामांकन संख्या, नाम, पता, अध्ययन केंद्र का कोड लिखा होना चाहिए और अंत में आपके हस्ताक्षर एवं प्रस्तुति की तिथि का उल्लेख होना चाहिए। इस तरह, आपकी 'अनुवाद परियोजना' का आरंभिक पृष्ठ इस प्रकार होगा :

कार्यक्रम का शीर्षक :	बांग्ला–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर सर्टिफिकेट (पी.जी.सी.बी.एच.टी.)
पाठ्यक्रम कोड :	एन.टी.टी.पी.–001
पाठ्यक्रम का शीर्षक :	अनुवाद परियोजना।
अध्ययन केंद्र का नाम:	....
नामांकन संख्या :	....
नाम :	....
पता :	....
	....
हस्ताक्षर :	....
तिथि :	....

- अनुवाद परियोजना के साथ एक प्रमाण–पत्र भी लगाएँ जिसमें आपके अपने हस्ताक्षर सहित यह प्रमाणित किया गया हो कि आपने यह अनुवाद–कार्य स्वयं किया है और इसके लिए किसी व्यक्ति की सहायता नहीं ली गई है।

- **अनुवाद परियोजना विश्वविद्यालय में निम्नलिखित पते पर व्यक्तिगत रूप से अथवा पंजीकृत डाक द्वारा भेजें :**

  कुलसचिव
  विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग (SED)
  इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
  मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

अनुवाद परियोजना प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि

जनवरी 2020 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **31 मई, 2020**
जुलाई 2020 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए : **30 नवंबर, 2020**

अंतिम तिथि के बाद भेजी गई परियोजना का मूल्यांकन विलंब से होगा और आप इस अध्ययन कार्यक्रम को देर से पूरा कर सकेंगे।

कृपया ध्यान दें :

प्रस्तुत की गई अनुवाद परियोजना की एक प्रति (फोटोकॉपी) अपने पास अवश्य रख लें।

शुभकामनाओं सहित।

अनुवाद परियोजना

(एम.टी.टी.पी. – 001)

1. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10x8=80

(a)

এটা নালা! ড্রাইভারের হিন্দি তর্জমায় আমি তাজ্জব। নালার সঙ্গে আমার তো নর্দমাই মনে পড়ে। আর-একটু কাছে গিয়ে ভাল করে দেখলাম। রুক্ষ জমি চিরে তিরতির করে সিন্ধুর দিকে বয়ে চলেছে সরু হানলে-চু। হানলে নালা! তার টলটলে জলে পাহাড়ের বাদামি আভা, আকাশের সুনীল ছায়া। আমারই ভুল। নদীমাতৃক লিপ্যান্তির ধারা বজায় রেখে প্রত্যন্ত এই গ্রামটার নামও হানলে।

এটা লাদাখের দক্ষিণ-পূর্বের চ্যাংথাং অঞ্চল। দুই বিখ্যাত সরোবর প্যাংগং-সো আর সো-মোরিরির সংযোগকারী রাস্তায় সিন্ধু নদের পাড়ে গুরুত্বপূর্ণ জংশন লোমা বেন্ড। এখানে সুরক্ষাবাহিনী আধার কার্ডের সঙ্গে মিলিয়ে দেখল আমাদের 'পার্চি', যাকে গোদা ইংরেজিতে বলে 'ইনার লাইন পারমিট'। নিজভূমে স্পর্শকাতর সীমান্ত অঞ্চল ঘুরে দেখার অনুমতিস্বরূপ মহামূল্যবান একটুকরো কাগজ। যদিও শুধু ওই চেকপোস্টটুকু বাদে কোথাও ছবি তোলার ক্ষেত্রে বিন্দুমাত্র বাধা নেই।

লোমা থেকে পঞ্চাশ কিলোমিটারের মসৃণ পিচরাস্তা আমাদের হানলে নিয়ে এল। গোটা রাস্তায় রঙ্গো গ্রামটা ছাড়া আর কোথাও জনমনিষ্যির চিহ্নমাত্র নেই। পথে আমাদের সঙ্গী ঝকঝকে নীল আকাশ, যেন এখনই ডেলা ডেলা নীল রং দুপুস করে খুলে পড়বে। আছে বিপরীতমুখী হানলে-চু, দু'পাশের বিস্তীর্ণ শুষ্ক প্রান্তর আর বেঁটে বেঁটে লাল, সবুজ, বাদামি পাহাড়। অনেক দূরে কালো পাহাড়টার মাথায় বরফের প্রলেপ। আগস্ট এখানে গ্রীষ্ম। তৃষ্ণার্ত আবহাওয়া এখন এক বিন্দু আর্দ্রতাও নিমেষে শুষে নেয়। শুধু হানলে চু-র প্রতি সে উদাসীন। সেই ম্যাজিকেই নালা ছুঁয়ে যাওয়া বন্ধ্যা জমিটুকুতে সবুজের আভা। সবুজের খোঁজে খোঁজেই জীবনধারণের টুকরো খুঁজে বেড়াচ্ছে ইয়াকের দল, কিয়াং নামে পাহাড়ি প্রজাতির বুনো গাধা আর ব্ল্যাক-নেক্ড ক্রেনের মতো দুর্লভ পাখি।

(b)

দু'বার গনোরিয়ায় আক্রান্ত হয়েছেন। সবচেয়ে বাজে তামাকে তৈরি সস্তার সিগারেট খান দিনে প্রায় ষাটখানা। আইন পড়া শুরু করেছিলেন। শেষ হয়নি। প্রথমবার রাজনৈতিক কারণে, দ্বিতীয়বার স্বেচ্ছায়। কারণ, ততদিনে বেশ বুঝে গিয়েছিলেন তিনি যে, আইন তাঁর পথই নয়। তিনি লিখতে চান। ফ্রানজ কাফকা নামের সেই বিমর্ষ চেক লেখক পালটে দিয়েছে লেখা সম্পর্কে তাঁর সমস্ত ধারণা। তিনিও লেখক হতে চান। তাঁর কয়েকটি গল্প প্রকাশিতও হয়েছে ইতিমধ্যে। কিন্তু অর্থও যে প্রয়োজন। কর্মসংস্থান করতে হবে কিছু একটা। তাই, বারানকিয়া

শহরে এসে ফের সাংবাদিকতায় আশ্রয় নিয়েছেন তেইশ বছরের গাব্রিয়েল গার্সিয়া মার্কেস। ফের— বয়স অল্প হলেও অভিজ্ঞতা তাঁর অল্প নয়। সাংবাদিকতা এর আগেও তিনি করে এসেছেন, কার্তাগেনায় আইন-ছাত্র থাকাকালীন, 'এল ইউনিভার্সাল' পত্রিকায়। ভবিষ্যতেও তাঁকে শরণাপন্ন হতে হবে সাংবাদিকতার। এ তাঁর অগতির গতি।

ভার্জিনিয়া উলফের একটি উপন্যাস পড়ে সম্প্রতি চমকে গিয়েছেন তিনি। উপন্যাসটির নাম 'মিসেস ড্যালোওয়ে'। উপন্যাসটিতে সেপ্টিমাস নামে এক চরিত্র আছে। প্রথম যুদ্ধের ভয়াবহতায় স্তব্ধবাক, বিষাদগ্রস্ত সেপ্টিমাস আত্মহত্যা করে। সেপ্টিমাস হয়ে যায় মার্কেসের ছদ্মনাম। 'এল হেরাল্ডো' পত্রিকায় একটি কলাম লিখতে শুরু করেন, রোজ একটি করে। টাকাও পান রোজের ভিত্তিতে, কলামপ্রতি তিন পেসো। কলামের নাম 'দ্য জিরাফ'। লেখক, সেপ্টিমাস।

লেখালিখি ছাড়া বাকি সময়ের অনেকটাই কাটে বইয়ের দোকানে বা কাফের আড্ডায়— কাফে কলাম্বিয়া, কাফে রোমা বা বইয়ের দোকান লাইব্রেরিয়া মুন্ডো। দিনে অন্তত দু'বার এই সব জায়গায় দেখা মেলে মার্কেসের। চলে সমমনস্ক বন্ধুবান্ধবদের— 'বারানকিয়া গ্রুপ' নামে খ্যাত— সঙ্গে সাহিত্য নিয়ে আলোচনা, পত্র-পত্রিকার পরিকল্পনা করে। মার্কেসের মুখে না-কাটা দাড়ি, এলোমেলো চুল, পরনে জিনস, শার্ট। লিখে যা আয়, তাতে একারও চলে যাওয়াটা দুষ্কর। ধারদেনা করতেই হয়। ভাল, সস্তার বাসস্থানও স্বাভাবিকভাবে পাননি মার্কেস। 'ক্রাইম স্ট্রিট' নামে কুখ্যাত এলাকার একটি চারতলা বাড়ির চতুর্থ তলার একটি ঘর ভাড়া নিয়েছিলেন তিনি। বাড়ির নিচে ছিল দু-একটি অফিস, বাকি তলাগুলি বেশ্যালয়। রাস্তার বিচিত্র কোলাহল, বেশ্যালয়ের বিচিত্র শব্দ-খিস্তি-খেউড়ের মাঝেই চলছিল তাঁর বসবাস। মাঝে-মাঝে মার্কেস বেশ্যাদের সাহায্য করেন, তাদের হয়ে চিঠি লিখে দিয়ে। তাদের একজনই আবার ইস্তিরি করে দেয় মার্কেসের জামা-ট্রাউজার। আর এসবের ভিতরই চলছিল তাঁর নিজস্ব লেখালিখি। যাঁকে মার্কেস তাঁর লেখকজীবনের অন্যতম গুরু মেনেছেন, সেই উইলিয়ম ফকনার কয়েকবছর পরই যখন বললেন যে, লেখকের কাছে বেশ্যালয়ের চেয়ে ভাল লেখার জায়গা আর হয় না, তা কাকতালীয় মনে হলেও, যেন ছিল মার্কেসের সেই জীবন থেকেই উদ্ভূত অনুভব।

(c)

হঠাৎ কী যে হল! এক সকালে মুনিষটা বালতি নিয়ে খাটালে ঢুকে খড়ের ভেতর গোঙানি শুনে দৌড়ে সবাইকে ডেকে আনে। বউটা কাদের অত্যাচারের শিকার হয়েছিল কে জানে! লোকে বলছিল পক্ষের শত্রু কেউ হবে।

পিলুভাই বুকে করে বউকে তুলে এনেছিল ঘরে। জমাট বাঁধা রক্ত ভিজে কাপড় দিয়ে মুছছিল, কাঁদছিল, জিজ্ঞেস করছিল কে ছিল? চেনা কেউ কিনা। ভবানী মড়ার মতো শুয়েছিল শুধু।

রাতে পিলুভাইয়ের স্বামী খবর নিতে এল। ভবানীর মুখ সাদা রক্তশূন্য হয়ে গেছিল মুহূর্তে। খামচে ধরেছিল চাদরটা। কোমরের নীচটা কেমন কাঠ শক্ত।

পায়ের তলার মাটি সরে গেছিল ভাইয়ের। কুসন্দেহ মনে নিয়ে ঘুমিয়েছিল সেদিন বউয়ের পাশে। কিন্তু কী আঠা আঠা ঘুম যে ধরল! সকালে হট্টগোল শুনে যখন সে ঘুম ভাঙল তখন তার ভবানী ঝুলছে মন্দিরের বটগাছে।

চল, প্রদক্ষিণ হয়ে গেছে। জুমির ডাকে ধারালো কুকরিখানা আঁচল থেকে খুলে ভবানীর পায়ে ছুঁইয়ে নতুন শাশুড়ির হাতে দেয় পিলুভাই। শাশুড়ি শপথ করে— বউকে মায়ের মতো রক্ষা করবে। তারপর সিঁদুর লাগা কুকরিটা বউয়ের হাতে দিয়ে বলে "সবসময় কাছে রাখবি এটা। সোয়ামির জন্য সিঁদুর। নিজের জন্য কুকরি!"

পিলুভাই স্থির চোখে সেই কাটা ডালের ক্ষতর পাশের নতুন কচি ডালগুলো দেখে। তারপর হাত নেড়ে জুমিকে ডাক দেয়।

ফেরার পথে জুমির মুখ হাসিতে ঝলমল করে। গাঁয়ের মেয়েদের সুরক্ষার জন্য বাঘনখ তৈরির কাজে নামার হুকুম দিয়েছে পিলুভাই।

(d)

ত্রিশবছর বয়স হল। চারপাশে লোকের মুখে খোঁড়া ডাক শুনতে অভ্যস্ত কাশীর জীবনে হঠাৎ একদিন পরিবর্তন। কাশীর ভাইপো কলেজে পড়ত। ট্রেনে করে দূরের টাউনে যায়, গাঁয়ের ছেলেমেয়েরা সেই কারণে পড়াশোনার সুযোগ হারায়। একদিন, বাড়ি ফেরেনি। রাত যত বাড়ে, দুশ্চিন্তা বাড়ে ততোধিক। একসময়ে কান্নাকাটি শুরু। সেইসময় কেরলে রাজমিস্ত্রির কাজ নিয়ে গিয়েছে বড়ভাই। মেজোভাই তেমন গা করল না। অতঃপর কাশীনাথ কোনওক্রমে হ্যাঁচোড় প্যাঁচোড় করে পাঁচ ক্রোশ উজিয়েছিল। সেই প্রথমবার।

এসে শোনে, লাইনের অসুবিধাতে ট্রেন বন্ধ। একঘন্টার পথ বহুকষ্টে তিনঘন্টায় তো এসেছে, আবার ফেরার কথা ভাবনাতেও অসম্ভব। সেদিন স্টেশনেই রাত্রিবাস। আর চোখের সামনে এক আশ্চর্য জগতের উদ্‌ঘাটন। এতদিন লোকমুখে শুনত, তা কল্পনাসাধ্য ছিল না। তাছাড়া জন্ম থেকেই হতচ্ছেদাতে তার বাস! স্বপ্ন দেখার কথাও কল্পনায় আসেনি আগে।

ক্রমশ রাত বাড়ে, টিকিট ঘরের সামনে বসে হাউমাউ কতকিছু বকেছিল সেদিন। স্টেশনমাস্টার ছিলেন লোক ভাল। তাঁরও দিনরাত একাই থাকা। এই দুঃখীর সঙ্গ খুব ভাল লাগে। সেদিন মাস্টারবাবুও অনেক কথা বলেছিলেন। দুটি অপরিচিত মানুষ সেদিন কেমন করে যেন একাত্ম হয়ে গিয়েছিল। সেই রাতে মাস্টারবাবুর হরিমটরে কাশীও প্রসাদ পেয়েছিল।

সকালে ভাইপোকে নিয়ে বাড়ি ফিরেছিল আনন্দে। তারপর কেমন করে রোজ আসা অভ্যাস হয়ে গেল। যে-দু'চারজন এইপথে যাতায়াত করে সবাই কাশীনাথের আপনজন হয়ে গেল। আর মাস্টারবাবু তো দেবতা। সাতবছর পেরলো। শীত-গ্রীষ্ম-বর্ষা কখনও অন্যথা হয় না।

মানুষের কষ্ট, মানুষের অক্ষমতাও কখন যেন অভ্যাসবশে অসারে এসে যায়। কাশীনাথেরও।

বুড়িমাটা তার জন্য বসে থাকে। সেই টানে প্রতিদিনই বাড়ি ফিরত। স্টেশনে দুটোচারটে পয়সা রোজগারও হয়, মা ব্যাটার দিন চলে যায়।

বাড়ির টানটা গেছে এইবছর। মা চলে গেল হঠাৎ। একদিন ফিরে দেখে মা ঠান্ডা হয়ে পড়ে। অন্য ভাইয়েরা টেরও পায়নি। মা কি শুধু তার একার?

(e)

এক যুগ আগে যখন সে জেলে চলে গিয়েছিল, এই ছবিটাই ছিল তার শেষ সঙ্গী। কিংবা প্রতিদিনের সঙ্গী। এখন ছাদের দরজাটা খুলে দিলে সে কি আবার সেই ছবিটা দেখতে পাবে? সেই অলীক এক আকাঙ্ক্ষায় হাট করে দরজাটা খুলে দেয় সে। কিন্তু কোথায় কী! কোথায় সেই ছবি! চারপাশ জুড়ে উঁচু উঁচু বাড়ি। ছাদটা যেন ঘেরাটোপে বন্দি হয়ে গিয়েছে। তবু তারাচরণ একবার সেই আকাশপানে তাকিয়ে থাকবে আর ছাদে শুয়ে শুয়ে দেখবে কোথাও আকাশবাণীর মতো বকবকম জেগে ওঠে কি না! কারণ, পায়রার ঘরটায় আর কাঠের বাসাটা নেই। সেজোভাই কিংবা মেজোভাই হয়তো ভাগাভাগি করে ভেঙে নিয়ে গেছে সেটা। তারাচরণ সেই আধভাঙা দেওয়ালের দিকে তাকিয়ে থাকল আর হাসল। কত কিছুই তো ভেঙে মরে গেল জীবনের। ভাগাভাগির পরে টানা বারান্দার একেবারে শেষের ঘরটা পেয়েছে সে। তার পাশে তেকোনা করে একটুখানি জায়গা। সে যদি ফিরে এসে রান্নাবান্না করে কোনও দিন, হয়তো সেই কারণেই। কিন্তু ওটুকু জায়গায় কি তা হয়! সে ভেবে পায় না। তা ছাড়া কে আর ভেবেছিল, তারাচরণ আবার ফিরে আসবে! এমন রুগ্ণ আর হাবাগোবা হাড়হাভাতে তারাচরণ জেলের ঘানি টানতে টানতে হয়তো মরেই যাবে! মরেই যেত সে! মরে যাওয়াই তার উচিত ছিল। বেঁচে থেকে কী-ই বা করবে? কিন্তু এতদিন জেলখানায় থেকে তারাচরণ জানতে পেরেছে, মানুষকে বাঁচিয়ে রাখে তার স্মৃতি। হ্যাঁ শুধু স্মৃতি। অবিরত স্মৃতি রক্তপ্রবাহের ভিতর দিয়ে কল্লোলিত হয়ে তাকে বাঁচিয়ে রেখেছে। ঘোলাটে আকাশের দিকে তাকিয়ে সেই স্মৃতির খোঁজ করল সে। খোঁজ করল কোথাও পায়রারা উড়ে এসে এসে তার স্মৃতির দাঁড়ে বসল কি না। শরীর টানটান করে তারাচরণ ছাদে শুয়ে পড়ে। শুয়ে শুয়ে দেখে বিকেলের আলো নিভে আসছে ক্রমশ। চারপাশের ফ্ল্যাটবাড়ির জানালায় জানালায় আলো জ্বলে উঠছে। এরকম কোনও জানালায় একদিন এক শিশুর মুখ দেখেছিল সে। মনে পড়ে। খিলখিল করে হাসছিল। সেই সঙ্গে আরও এক মিষ্টি তরুণীর হাসির তরঙ্গ।

তারাচরণ জানত এরকম করে বেঁচে থাকার তরঙ্গ ছড়িয়ে পড়ে বাতাসে বাতাসে। নিভৃতে। ভাবতে ভাবতে সে আনমনা হয়ে গিয়েছিল কি। হাসি আর জীবনের তরঙ্গ থেমে গিয়েছিল। সে কি খেয়াল করেনি? নিভে যাওয়া আলো কি সে খেয়াল করেনি? ওই বাড়িটার জানালা আর কতদূর। ওই ঘরের জানালায় যেন বেশ কয়েকটা মানুষের ফিসফিস। চলাফেরা অন্ধকারে। তার পায়রার ঘরে পায়রারা হঠাৎ বকবকম শুরু করেছে। কেন? কেন? সে দৌড়ে নেমে গিয়েছিল। হাঁই হাঁই করে পাইপ বেয়ে সেই জানালায় হাজির হয়েছিল। তার পরে কতক্ষণ পাইপ ধরে সেই অন্ধকার নিঝুম জানালায় তাকিয়ে ঝুলে ছিল, সে জানে না।

(f)

হরিপদ যেন একটু আহত হল, "আজ্ঞে পরকীয়ার খরচা নাই? মাঝে মধ্যি কলকাতা ঘোরা, টেক্সি চাপা, রেস্টুরেন্টে খাওয়া, রুজ-লিপিস্টিক-সেন্ট।"

"না মানে পরকীয়া, এই বয়সে?"

বলেই বুঝলেন ভুল বলেছেন। পরকীয়ার কি আর বয়স হয়? ফর্মে ফাঁকা জায়গাটায় 'পারচেজ অফ হাউসহোল্ড গুডস' লিখতে গিয়ে হরিপদর দিকে তাকিয়ে থেমে গেলেন। কাঁধের ঝোলা ব্যাগটা থেকে একরাশ মুখ ছেঁড়া ইনল্যান্ড লেটার বের করছে হরিপদ।

"সেদিন বউটার গয়নার বাক্স থেকে এই চিঠিগুলো পেলুম ছার। সারাটা জীবন তাকে সতী-লক্ষি জেনে ঘর করেছি, মরণের পর সে ভুল ভেঙে গেল। এখন আর কাকে ধরব? রাগ হয় না, বলুন স্যার? তাই ঠিক করলুম, দেখি আমিও পারি কি না... শোধবোধ পায়ে সোদ। তবে এ সবের হ্যাপাও তো কম নয়। দোকান-টোকান বন্ধ রেখে এদিক সেদিক যেতে হবে। হাতে কিছু থাকা ভাল।"

ম্যানেজারবাবু দেখলেন হরিপদর চোখের কোণে চিকচিকে জল, লুকনোর জন্য মাথা নিচু করে চিঠিগুলো টেবিল থেকে একটা একটা করে গুছিয়ে তুলছে, যেন তার গচ্ছিত রাখা জীবনের ভাঙা টুকরো, যার কাছে বিশ্বাস করে রেখেছিল, সে অসাবধানে ভেঙে ফেলেছে।

(g)

স্বপ্নসন্ধান প্রথম নাটক 'কর্কটে রাহু'। একাঙ্ক নাটকটি একটি মধ্যবিত্ত পরিবারের কাহিনি। সেখানে পরিবারের জ্যেষ্ঠ সদস্য, চার সন্তানের পিতা রাশিফলের শুভাশুভতে অন্ধবিশ্বাসী। তিনি জানতে পারেন তাঁর কর্কট রাশিতে রাহুর প্রভাবের কথা। অতএব পূর্বনির্ধারিত পাত্রপক্ষের তার জ্যেষ্ঠা কন্যাকে দেখতে আসা বাতিল করতে চান তিনি। এর বিরুদ্ধাচরণ করে তার ছেলে। এ নিয়ে পিতা-পুত্রের দ্বন্দ্ব চরমে ওঠে, নির্মল হাস্যরস নাটকটিকে স্বাভাবিক গতিই দেয়, কিন্তু কিছু জায়গায় অনাবশ্যক তাড়াহুড়ো নাটকের ছন্দকে ব্যাহত করেছে। পিতা ও পুত্রের চরিত্রে যথাক্রমে সুরজিৎ রায় এবং এনামেত ইসলামের অভিনয় প্রশংসার দাবি রাখে। বাকি কলাকুশলীরা অভিনয়ে যথাযথ ছিলেন।

২০০৬ সালে, 'পাকদণ্ডী' নাটকে নিজেদের গান প্রথম ব্যবহার করে অক্ষৌহিণী। তারপর থেকে অন্য প্রযোজনাগুলিতেও সে ধারা অব্যাহত থেকেছে। অনুষ্ঠানের দ্বিতীয় পর্বে, নাটকের দলের কর্মীদের কণ্ঠে শোনা গেল এই নাট্যদলের বিভিন্ন প্রযোজনায় ব্যবহৃত 'বলো না তোমার চোখে..', 'একটুখানি মান একটুখানি হুঁশ', 'ছবি আঁকতে চাই', 'ক্লাস নাইনের প্রথম শাড়ি' প্রভৃতি গানগুলি। পথনাটিকার ঢঙে উপস্থাপিত গানগুলির সঙ্গে বাদ্যযন্ত্রে সহায়তা করলেন শুভদীপ পাকড়াশি।

শেষে ছিল অক্ষৌহিণীর দ্বিতীয় নাটক 'অভিমানী প্রেম'। কাহিনিসূত্র রবীন্দ্রনাথের ছোটগল্প 'শাস্তি'। নির্দেশনা ও সম্পাদনায় সঞ্জীব নস্কর। নাটকটির সৃজনে ছিলেন সুরজিৎ রায়, এনায়েত ইসলাম, দেবযানী হালদার, অপর্ণা মণ্ডল, মানস দেব প্রমুখ। দুখিরাম-ছিদাম-রাধা-চন্দরার সম্পর্কের টানাপোড়েন, মানুষের অভাব-অনটনের ক্ষেত্র, প্রচলিত পথেই ভাবনার চলনের মতো বিষয়গুলি যে আজও আদতে একই আছে কেবল বদলে গেছে তার বহিরঙ্গ, তারই প্রতীকরূপে চরিত্রগুলির সংলাপে এসেছে বর্তমান সময়ের সংকট। ফসলের ন্যায্য দাম না পাওয়ায় চাষিদের আত্মহত্যা, পুরুষের মতোই নারীরও যে মানুষ পরিচয়টাই মুখ্য, অথচ তা নিয়ে সমাজের প্রায় সব স্তরেই আছে ভাবনাগত সংকীর্ণতা— এই প্রসঙ্গগুলি নাট্যকারের ভাবনায় এসেছে সেই সংকটের সূত্র ধরেই। গুরুগম্ভীর নাট্যমুহূর্তের মাঝে কমিক রিলিফ মানস দেব অভিনীত চক্কোত্তি মশাইয়ের চরিত্রটি। সব মিলিয়ে একটি নিটোল প্রযোজনা।

(h)

প্রবাসী শরতের টুকটুকে রং ধীরে ধীরে জমতে শুরু করেছে গাছেদের নীরস পাতায়। বাতাসে শিরশিরে আমেজ। রাস্তার মোড়ে দাঁড়ালে হঠাৎ চোখে পড়ে সাদা কাশের মখমলি ঢেউ— কাশফুলের মার্কিন সংস্করণ, মিসক্যানথাস! তার রুপোলি শরীরে আশ্বিনের কোমল রোদের আদর। এদিক-ওদিক প্রতিটি পর্ণমোচী গাছের পাতায় ছড়িয়ে গেছে বার্ধক্যের রং, যা সবুজ যৌবনের সজীবতাকেও ম্লান করে দেয়।

শরতের সঙ্গে উৎসবের সম্পর্ক বোধহয় বহু পুরনো। শরৎ মানে বদলে যাওয়া প্রকৃতি, শরৎ মানে তেরছা রোদ্দুরের রূপরেখা। শরৎ আসলে 'সিজন অফ দ্য হার্ভেস্ট'। সম্ভাবনাময় পরিপূর্ণতার সময়। কলম্বাসের দেশে তাই রোদের রঙে পাকা কমলা আভা ধরলেই 'ফল ফেস্টিভ্যাল' এসে দরজায় নক করে। পেনসিলভ্যানিয়া বাকস কাউন্টির কান্ট্রিসাইড প্রপার্টি পেডলার'স ভিলেজে অসাধারণ লোকশিল্পের সম্ভার নিয়ে এই সময়েই শুরু হয়ে যায় 'স্কেয়ারক্রো ফেস্টিভ্যাল', চলে 'স্কেয়ারক্রো কম্পিটিশন অ্যান্ড ডিসপ্লে'ও। প্রায় সারা বছর ধরেই কোনও না কোনও উপলক্ষে নানা উৎসব অনুষ্ঠিত হয় এখানে— স্ট্রবেরি ফেস্টিভ্যাল, ওয়াইন অ্যান্ড আর্ট ফেস্টিভ্যাল, গ্র্যান্ড ইলিউমিনেশন সেলিব্রেশন... এছাড়াও সারা বছর ধরেই বিয়ে, হলিডে পার্টি, রিইউনিয়নের জন্যে পেডলারস ভিলেজ সদা উজ্জ্বল, প্রাণবন্ত। সজীবতায় এতটুকু ভাটা পড়ে না। ১৯৬২ সালে স্থাপিত, বিয়াল্লিশ একর জুড়ে বিস্তৃত এই ঐতিহাসিক গ্রামে ছড়িয়ে থাকা ঔপনিবেশিক-শৈলীতে নির্মিত ঘরবাড়ি, পুরস্কারজয়ী উদ্যান, সত্তরটিরও বেশি স্বতন্ত্র বিপণি, ব্যতিক্রমী রসনাতৃপ্তির নিমিত্ত ভোজনালয়, পানশালা, পান্থনিবাসের উপস্থিতি প্রায় পঞ্চাশ বছরেরও বেশি সময় ধরে দর্শকদের বিমোহিত করে চলেছে।

2. **निम्नलिखित का बांग्ला में अनुवाद कीजिए।** 10×2=20

(क)

नई खोज अथवा आधारभूत विज्ञान अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण हो सकते हैं, परंतु आमतौर पर आम नागरिक को तो इसके प्रभावों और परिणामों से मतलब होता है। एक ही विषय पर विभिन्न स्रोतों से जानकारी प्राप्त करना तथा विषय विशेषज्ञों से चर्चा करना, संदर्भ तय करने और विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायता करेगा। संपादक के साथ श्रोताओं के विषय में विचार विमर्श करने से विषय का विस्तार क्षेत्र निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।

इसी संदर्भ में सवाल यह भी पैदा होता है विज्ञान संचार क्या है और यह कब शुरू हुआ ?

यह एक ऐसा विषय और एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका विकास भारत और शेष विश्व में भी लगभग गत तीन दशकों में हुआ है। इसकी वृद्धि एक महत्वपूर्ण जननीति के रूप में हो रही है और खास बात यह है कि हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पंडित नेहरू का इसे समर्थन प्राप्त था। इसका उद्देश्य है कि जनता को विज्ञान की प्रक्रियाओं और संस्कृति में शामिल किया जा तथा उन्हें इस बारे में जागरूक किया जाए कि वैज्ञानिक एवं अभियंता क्या प्राप्त करने की कोशिश में हैं।

वैज्ञानिक विषयों पर औपचारिक एवं अनौपचारिक सम्मेलनों में अक्सर लंबी चर्चाएँ होती रहती हैं। प्रौद्योगिकी में विज्ञान के अनुप्रयोग अधिकारिक दृष्टव्य होते जा रहे हैं। अनुसंधान में निवेश आम आदमी के जीवन पर प्रभाव डालने लगा है। जैसे-जैसे प्रकृति को संचालित करने वाले नियमों के बारे में हमारी समझ में सुधार हो रहा है, विभिन्न राज्य भी विज्ञान की प्रगति में निवेश को प्रोत्साहित करने लगे हैं। फिर भी, विरोधाभास यह है कि वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षण के प्रति युवाओं में रुचि कम होती हुई दिखाई पड रही हैं।

विज्ञान संचारक ऐसे व्यावसायिक एवं व्यावहारिक कार्यकर्ता हैं जो सभी उम्र के लोगों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे विशिष्ट लक्ष्य समूहों तक पहुँच बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के माध्यमों को उपयोग में लाते हैं। इसलिए प्रभावी विज्ञान संचारकों के लिए अपने पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों को जानना और उनकी जरूरतों को समझना जरूरी है।

(ख)

कहने की जरूरत नहीं। नया साल मुबारक, पुराने का मुँह काला। यही दुनिया का कायदा है। और कैसे न हो। जरा मिलाकर देखो दोनों को। यह देखो नया साल, गुलाबी-गुलाबी, और वह रहा तुम्हारा पुराना साल, चीकट, मटमैला।

नया साल झबरे-झबरे बालों वाला ऊँची नसल का नन्हा-मुन्ना प्यारा-सा पपी है जिसे बरबस, गोद में उठा लेने को जी चाहता है, ऊन के गोले जैसा गरम, गुदगुदा। और वह पुराना साल खुजली का मारा, लीबर बहाता, मरियल, बूढ़ा, लावारिस कुत्ता जो हर घर से दुरदुराया जाता है। नया साल हरी-भरी दूब की वीथी है जिस पर अगल-बगल, रंग-बिरंगे सुगंधित फूलों की लताओं ने मंडप-सा तान रखा है, और पुराना साल कीचड़ और काई से ढँका हुआ वह ऊबड़-खाबड़ कंकरीला रास्ता जिसे अब पीछे मुड़कर ताकते डर लगता है। नया साल एक अनजाने सुख की सिहरन है, पुराना साल भोगे हुए कष्टों की एक कड़ी। कितना बुरा था पुराना साल। ढंग का खाना न ढंग का कपड़ा। कीमतें आसमान से बात करती हुईं। रहने को मकान नहीं, दस-दस कुनबे बेशर्मी की चादर ओढ़कर एक जरा-सी कोठरी में जिंदगी के दिन गुजार रहे हैं। क्या था पुराने साल में जिसे चाव से कोई याद करे। अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ, उसकी अरथी निकल गई। कोई उसके लिए दो आँसू गिरानेवाला नहीं है।

आज नये साल की शाम है। अब तो हम नये साल की पौ फटते देखेंगे - बड़े हुलास से आगे बढ़कर उसका स्वागत करेंगे और किसी बहुत मनभाते मेहमान की तरह आँखों में आँखें डालकर, प्यार से हाथ पकड़कर उसे कमरे के भीतर ले आएँगे जहाँ इतने सारे लोग उसकी अगवानी में आँखें बिछाए बैठे हैं। और आँखें ही नहीं, दस्तरखान भी, जिस पर, साथ बैठकर पीने के लिए एक से एक नायाब शराबें चुनी हुई हैं और एक से एक सुस्वादु मेवों से भरपूर केक और पेस्ट्रियाँ।

— X —